B.Ed 2nd Year
Session - 2018-2020
Subject - School Management and Leadership
Course - 11 (e), Unit - 2(C)
Topic – Set-up of Games (**खेल-कूद के संगठन**)
Lecture No. – 21

Dr. Amod Kumar Sinha
Assistant Professor
Department of Education
A. N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

खेल का मैदान

खेल–कूद के संगठन – खेल–कूद के संगठन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हर बालक को खेलने का नित्य मौका मिलना चाहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि दैनिक-सारणी (Daily-Routine) में एक घण्टा खेल के लिए अवश्य दिया जायः–

1. खेल का घण्टा किस समय रखा जाय, यह खेल के मैदान में उपलब्ध जगह, खेल के सामानों की संख्या आदि के विचार से निश्चित किया जाए। यदि स्कूल के मैदान में सभी बालकों को एक साथ खेलने के लिए उपलब्धता हो तो, आखरी घण्टा सभी कक्षाओं के लिए निर्धारित कर लिया जाय। ऐसा करने से भी बालकों को एक साथ खेलने का अवसर मिलेगा जो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बड़ा हितकर होता है। जिस स्कूल में खेल के लिए पर्याप्त जगह नहीं हो, वहाँ कक्षा के लिए खेल की घण्टी भिन्न–भिन्न समयों में रखी जाय। उदाहरण के लिए, यदि 8वें वर्ग के बालक 5वीं घण्टी में खेलते हों, तो 10वें वर्ग के बालक 7वीं घण्टी में खेलें। जहाँ स्कूल 10:30 बजे से 4 बजे तक चलता हो, वहाँ खेल की घण्टी उत्तरार्द्ध में रखी जानी चाहिए, अर्थात् 2 बजे से 4 बजे तक की अवधि में। गर्मी के दिनों में जब स्कूल सुबह में लगता हो, तो खेल की घण्टी को पूर्वार्द्ध में, अर्थात् 6:30 बजे से 8:30 बजे के बीच रखना चाहिए। एकरूपता को मिटाने के लिए खेल के घण्टे का समय बीच–बीच में बदल दिया जाना चाहिए।

2. खेलों का चुनाव अत्यन्त सावधानी से किया जाना चाहिए। सबसे अच्छे खेल वे होते हैं, जिनके खेलने में सभी छात्रों को पूर्णरूप से सक्रिय होने का मौका मिलता है।

वह खेल जिसमें कुछ छात्र परिश्रम करते हों और कुछ छात्र निष्क्रिय रूप में खड़े रहें, यह अच्छा नहीं होता। इस दृष्टि से फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबॉल आदि अच्छे खेल होते हैं। देशी खेल भी अवश्य खेलें जायें; जैसे– कबड्डी आदि।

3. खेल के लिए जो टीमें या दल बनाई जायें, वे कक्षा के आधार पर नहीं बल्कि खेल सम्बंधी कुशलता (Skill) के आधार पर। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि कम उम्र के बच्चे अपनी उम्र के बच्चों से अधिक अच्छा खेल लेते हैं। अच्छा खेलने वाले बच्चों को हीन बच्चों के साथ रख देने से उनकी योग्यता का विकास न होगा। दल के संगठन को छात्रों की लम्बाई तथा अवस्था पर भी ध्यान देना चाहिए। लम्बे व अधिक आयु वाले किशोरों के बीच एक छोटे बालक का रहना अच्छा नहीं दिखता। सामान्यतः प्रत्येक दल का दलपति होना चाहिए, जो अपने दल का अच्छा खिलाड़ी हो। प्रत्येक दल की देख–रेख, जवाबदेही एक शिक्षक पर रहनी चाहिए। प्रत्येक को अपना–अपना खेलने का सामान रहेगा, जो दलपति के अधीन रहेगा।

4. प्रत्येक प्रकार के खेल के सम्बंध में प्रतियोगिता आयोजित होनी चाहिए। यह प्रतियोगिता स्कूल के भीतर से भिन्न–भिन्न टीमों तथा सकूलों के साथ आयोजित होनी चाहिए।

(समाप्त)